classmate
Date 28/05/20
Page 1

लॉक का सरल तथा जटिल प्रत्यय (प्रथम भाग)

Simple and Complex Ideas of Locke (First Part)

⟹ प्रत्ययों की उत्पत्ति का आधार हमारी अनुभूतियां हैं और लॉक ने इन प्रत्ययों को दो वर्गों में बांटा है - सरल प्रत्यय (Simple ideas) तथा जटिल प्रत्यय या मिश्रित प्रत्यय (Complex or mixed ideas)

सरल प्रत्यय से अर्थ उन प्रत्ययों से है जिनकी प्राप्ति संवेदना या स्वसंवेदना अथवा दोनों के मिलने से होती है। लॉक के अनुसार सरल प्रत्ययों का विश्लेषण संभव नहीं क्योंकि उनका स्वरूप आणविक (atomic) होता है। जिस प्रकार भौतिक शास्त्र का अणु अत्यन्त ही सूक्ष्म, सरल और अविभाज्य माना जाता है तथा जिनकी सहायता से भौतिक वस्तुओं का निर्माण हुआ है उसी प्रकार लॉक के अनुसार सरल प्रत्यय अत्यन्त ही सूक्ष्म होते हैं और इसलिए इनका न तो विभाजन सम्भव है न विश्लेषण। फिर जिस प्रकार अणुओं के मिलने से भौतिक वस्तुओं का निर्माण हुआ है ठीक उसी प्रकार लॉक

के अनुसार सरल प्रत्ययों को जोड़ कर हमलोग ज्ञान की रचना करते हैं।

लॉक के अनुसार सरल प्रत्ययों को ग्रहण करते समय मानव मन निष्क्रिय रहता है अर्थात इस कार्य के लिए मन को किसी प्रकार की क्रिया की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन जब इन्हीं सरल प्रत्ययों को जोड़कर ज्ञान का रूप दिया जाता है तो इस कार्य के लिए मन को सक्रिय होना पड़ता है। उदाहरण के लिए यदि हम आकाश की ओर देखते हैं तो सहज ही हमें चाँद का आकार और रंग का सरल प्रत्यय प्राप्त होता है जिसने हमारे मन को किसी प्रकार की क्रिया नहीं करनी पड़ी परन्तु आकार और रंग रूपी इन सरल प्रत्ययों को जोड़कर अर्थात चाँद का ज्ञान प्राप्त करने के लिए मन को सक्रिय होना पड़ता है और इसके परिणाम स्वरूप ही हमें चाँद का ज्ञान होता है। लॉक ने इस तथ्य को एक अन्य उदाहरण के द्वारा समझाने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा कि यह बात हम पर निर्भर है कि हम अपनी उंगलियों को हिलायें अथवा नहीं। लेकिन जब हम उन्हें हिलाने का निश्चय कर लेते हैं तो फिर उन्हें हिलते हुए देखने के लिए बाध्य होते हैं।

सरल प्रत्ययों की एक विशेषता यह है कि इनका बोध हमें सीधे तौर पर होता है, जैसे, रंग, गंध, स्पर्श इत्यादि। इन प्रत्ययों को जानने के लिए किसी भी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती, वस्तुएं हमारे सामने रहती है और साक्षात रूप से हमें उनका ज्ञान होता है। लिए लॉक ने कहा है कि मानव मन स्वयं अपनी ओर से किसी नए सरल प्रत्यय की उत्पत्ति नहीं कर सकता और न ही वह किसी सरल प्रत्यय का विनाश कर सकता है। जिस प्रकार भौतिक जगत में हम किसी नए अणु का निर्माण नहीं कर सकते और न ही किसी अणु का नाश कर सकते है ठीक उसी प्रकार हमारा मन न तो किसी प्रत्यय को उत्पन्न कर सकता है और न विनाश।

सरल प्रत्ययों को लॉक ने चार प्रकार का माना है। सबसे पहले कुछ प्रत्यय ऐसे है जिनकी प्राप्ति केवल एक इंद्रिय से होती है। उदाहरण के लिए आंख से रंग, जिह्वा से स्वाद, नाक से गंध, कान से शब्द, त्वचा से स्पर्श। दूसरे प्रकार के सरल प्रत्यय वे है जिनकी प्राप्ति एक से अधिक इन्द्रियों से होती है जैसे विस्तार, आकार इत्यादि। तीसरे प्रकार के सरल प्रत्यय वे है जिनकी प्राप्ति स्वसंवेदना से होती है जैसे स्मृति इत्यादि। चौथे प्रकार के सरल प्रत्यय वे है जिनकी प्राप्ति संवेदना और

स्वसंवेदना के योग से होती है।

प्रत्ययों का दूसरा प्रकार जटिल या मिश्रित प्रत्यय है। मिश्रित प्रत्यय सरल प्रत्ययों की समुष्टि है। संवेदना एवं स्वसंवेदना द्वारा सरल प्रत्ययों की प्राप्ति होती है और इस अवस्था में मन पूर्णतः निष्क्रिय रहता है। लेकिन जब इन्हीं सरल प्रत्ययों को ज्ञान का रूप देने के लिए जोड़ना पड़ता है तो मन सक्रिय हो जाता है। सरल प्रत्ययों से हमारे ज्ञान का निर्माण ठीक उसी प्रकार होता है जिस प्रकार अणुओं से भौतिक वस्तुओं का। पर जिस प्रकार अणुओं से भौतिक वस्तुओं की रचना के लिए क्रिया की आवश्यकता होती है उसी प्रकार ज्ञान के निर्माण के लिए भी मन की क्रिया की आवश्यकता होती है। इसलिए लॉक ने कहा है कि इन्द्रियों से प्राप्त सरल प्रत्ययों को मन अपनी क्रिया से जोड़ता है जिसे हम ज्ञान की संज्ञा देते हैं।

शेष अगले भाग में

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.